2 अनुपम गुरुभक्त

पठन-पूर्व बोध : गुरुओं एवं गुरुजनों का सम्मान सदियों से भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है। बड़े-बड़े राजा-महाराजा तक गुरुओं के आगे नतमस्तक हो जाते थे। विश्वामित्र, वशिष्ठ आदि गुरुओं ने अपने शिष्यों का सदैव उचित मार्गदर्शन किया। शिवाजी ने अपने गुरु स्वामी रामदेव की आज्ञा का पालन कर प्राचीन गुरु-शिष्य परंपरा का अनुपालन किया।

भाव-बोध : प्रस्तुत पाठ में महाराष्ट्र केसरी महाराज शिवाजी और उनके गुरु रामदास द्वारा गुरु-शिष्य महिमा का बखान किया गया है। गुरु के प्रति अपार श्रद्धा रखने वाला शिष्य उनकी परीक्षा-रूपी कसौटी पर सदैव खरा उतरता है; आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राण तक न्योछावर कर देने की क्षमता रखता है।

जीवन-मूल्य बोध : गुरु व आचार्य का सम्मान करना, उनके प्रति कृतज्ञ होना, गुरु की परीक्षा में खरा उतरने का प्रयास करना, गुरुओं का निर्लोभी एवं स्वार्थरहित होना एवं शिष्यों का उचित मार्गदर्शन करना।

स्वामी रामदास अपने शिष्यों के साथ बराबर घूमते रहते थे। कभी-कभी उनके साथ शिवाजी भी होते थे। शिवाजी अपने गुरु की बड़ी निष्ठा से सेवा किया करते थे। वे उनकी आज्ञा का पालन तो करते ही थे, साथ-ही-साथ उनके सभी काम-काज भी किया करते थे। उनकी गुरुभक्ति स्वामी जी के प्राणों में आनंद पैदा करती थी।

एक बार स्वामी जी के मन में शिवाजी की गुरुभक्ति की परीक्षा लेने का विचार उत्पन्न हुआ। वर्षा के दिन थे। संध्या हो रही थी। आकाश पर बादल छाए हुए थे। स्वामी जी चारपाई पर जा पड़े और हाथों से अपने पेट को पकड़कर ज़ोर-ज़ोर से कराहने लगे।

शिवाजी को जब पता चला, तो वे उनके पास दौड़े-दौड़े आए। उन्होंने स्वामी जी से बड़ी विनम्रता से पूछा, "गुरु जी, आप क्यों कराह रहे हैं? आपको क्या कष्ट है?"

स्वामी जी ने कराहते हुए उत्तर दिया, "कुछ मत पूछो शिवा! मेरे पेट में बड़े ज़ोरों की पीड़ा हो रही है।"

शिवाजी बोल उठे, "आप व्याकुल न हों गुरु जी! मैं अभी वैद्य जी को बुला लाता हूँ। वे आपको दवा देंगे और आपके पेट की पीड़ा शांत हो जाएगी।"

रामदास ने कराहते हुए कहा, "कोई दवा काम नहीं करेगी शिवा! वैद्य जी आए थे। उन्होंने कहा कि मेरे पेट में जो पीड़ा हो रही है, वह सिंहनी के दूध को छोड़कर और किसी वस्तु से ठीक नहीं होगी। अब तो बचना बहुत कठिन है, क्योंकि सिंहनी का दूध कहाँ मिल सकता है!"

स्वामी रामदास अपने कथन को समाप्त करके ज़ोर-ज़ोर से कराहने लगे। शिवाजी स्वामी जी की ओर देखते हुए बोले, "ऐसा क्यों कहते हैं गुरु जी! सिंहनी का दूध क्यों नहीं मिलेगा? मैं आपके लिए सिंहनी का दूध लाऊँगा।"

स्वामी रामदास ने पेट को पकड़े हुए कहा, "तुम मेरे लिए दूध लाओगे? सिंहनी को तो कोई पालता नहीं। फिर क्या वन में सिंहनी को दुहने के लिए जाओगे? सिंहनी तुम्हें मारकर खा जाएगी।"

शिवाजी ने बिना किसी झिझक और भय के उत्तर दिया, "आप बिल्कुल चिंता न करें गुरु जी! मैं आपके लिए सिंहनी का दूध लाऊँगा, अवश्य लाऊँगा।"

सूर्यास्त हो चुका था। चारों ओर अँधेरा फैल रहा था। शिवाजी हाथ में पात्र लेकर वन की ओर चल पड़े। वर्षा होने लगी, बादल गरजने लगे और रह-रहकर बिजली भी चमकने लगी। शिवाजी भीगते हुए सघन वन की ओर बढ़ने लगे।

देखते-ही-देखते अर्धरात्रि बीत गई। शिवाजी वर्षा से बचने के लिए एक वृक्ष के नीचे खड़े हो गए। उनके मन में बहुत बड़ी चिंता थी। वे सोच रहे थे, 'आधी रात बीत गई, पर अभी तक कोई सिंहनी दिखाई नहीं पड़ी। क्या गुरु जी के लिए सिंहनी का दूध नहीं मिल सकेगा? यदि मैं खाली हाथ लौटकर गया, तो वे मन में क्या सोचेंगे? यदि मुझे दूध न मिला, तो मैं लौटकर गुरु जी के पास न जाऊँगा।'

चारों ओर सघन अँधेरा छाया हुआ था। अपना ही हाथ अपने को नहीं दिखाई पड़ रहा था। पानी बरस रहा था। सहसा ज़ोर से बिजली चमकी। शिवाजी बिजली के प्रकाश में यह देखकर विस्मित हो उठे कि वर्षा से बचने के लिए एक सिंहनी अपने बच्चे के साथ खड़ी है।

शिवाजी के आनंद की सीमा नहीं रही। उन्होंने हाथ के पात्र को सँभालते हुए कहा, "माँ, मेरे गुरु के पेट में बड़ा दर्द हो रहा है। औषधि के लिए मुझे तुम्हारा थोड़ा-सा दूध चाहिए।"

सिंहनी ने अपनी गरदन झुका ली और शिवाजी ने उसी तरह सिंहनी का दूध दुहा, जिस तरह गाय का दूध दुहा जाता है। शिवाजी ने सिंहनी के दूध को ले जाकर स्वामी रामदास को दिया। स्वामी जी ने उनकी पीठ ठोंकते हुए कहा, "शिवा! तुम अपने प्राणों पर खेलकर मेरे लिए सिंहनी का दूध लाए हो। एक दिन तुम सिंह के समान ही प्रबल पराक्रमी बनोगे।"

मौखिक प्रश्न

(क) शिवाजी अपने गुरु की सेवा किस तरह से करते थे?
(ख) एक बार स्वामी जी के मन में कौन-सा विचार उत्पन्न हुआ?
(ग) स्वामी रामदास के पेट की पीड़ा किस तरह से दूर हो सकती थी?
(घ) शिवाजी सिंहनी का दूध लाने कहाँ और किन परिस्थितियों में गए?
(ङ) वन में सिंहनी कहाँ खड़ी थी?

गुरु के आशीर्वाद से सचमुच शिवाजी सिंह के समान ही प्रबल पराक्रमी हुए। उनकी वीरता की कहानियाँ बड़ी श्रद्धा से आज भी कही और सुनी जाती हैं।

*****

उन दिनों शिवाजी रायगढ़ के दुर्ग में थे।

दोपहर के पूर्व का समय था। कंधे पर झोला लटकाए रामदास शिवाजी के द्वार पर जा पहुँचे। उन्होंने द्वार पर खड़े होकर आवाज़ दी, "जय-जय राम!"

शिवाजी गुरु जी की आवाज़ पहचान गए। वे झट-से बाहर निकले। उन्हें देखते ही स्वामी रामदास बोल उठे, "शिवा! आज मैं तुम्हारे द्वार पर भिक्षा माँगने आया हूँ।"

शिवाजी चिंता में पड़ गए। वे सोचने लगे, 'गुरु जी को भिक्षा में क्या दूँ?' उनके दिमाग में जो भी चीज़ आती थी, वह उन्हें बहुत ही तुच्छ लगती थी। फिर वे करें तो क्या करें? शिवाजी सोचते हुए भीतर गए और कुछ क्षणों बाद ही बाहर निकले। उनके हाथ में एक कागज़ था। उन्होंने उसे मोड़कर स्वामी रामदास की झोली में डाल दिया।

स्वामी रामदास चले गए, पर एक घंटे के बाद लौटकर उन्होंने फिर आवाज़ दी, "जय-जय राम!"

गुरु की आवाज़ सुनकर शिवाजी पुनः बाहर निकले। उन्हें देखकर स्वामी रामदास बोले, "शिवा! अगर तू दो मुट्ठी आटा मुझे भिक्षा में देता, तो मैं बाटी बनाकर खाता, पर तूने तो मुझे कागज़ दिया। मैं इस कागज़ को लेकर क्या करूँगा?"

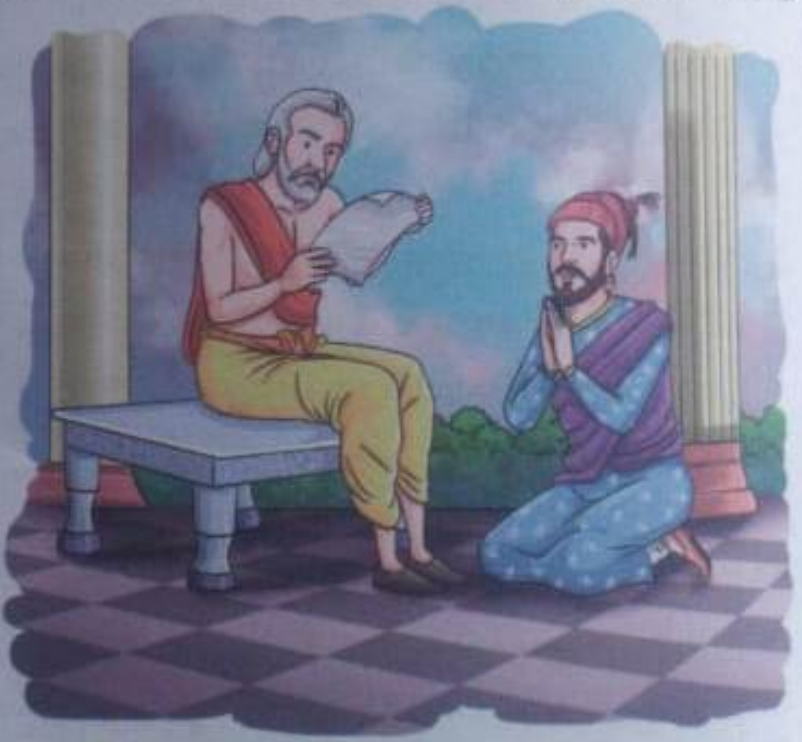

शिवाजी ने कागज़ में अपना सारा राज्य स्वामी रामदास को देकर, उसके नीचे अपने हस्ताक्षर कर दिए थे। स्वामी रामदास ने कागज़ को झोली से निकालकर शिवाजी को दे दिया। शिवाजी उनके चरणों पर लोट पड़े।

स्वामी रामदास ने बड़े स्नेह से शिवाजी को उठाते हुए कहा, "शिवा! मैं साधु हूँ, राज्य लेकर क्या करूँगा? मुझे तो केवल दो मुट्ठी आटा चाहिए।"

आज के संसार में बहुत खोजने पर भी शिवाजी जैसा शिष्य और स्वामी रामदास जैसा गुरु कहीं नहीं मिलेगा।

–संकलित

मौखिक प्रश्न

(क) स्वामी रामदास ने शिवाजी को कौन-सा आशीर्वाद दिया?

(ख) स्वामी रामदास किसके द्वार पर भिक्षा माँगने गए?

(ग) शिवाजी ने कागज़ में क्या लिखा था?

शब्द-अर्थ

निष्ठा - श्रद्धा एवं भक्ति
पीड़ा - दर्द
व्याकुल - बेचैन
सूर्यास्त - सूर्य का छिप जाना
पात्र - बरतन
सहसा - अचानक
विस्मित - चकित, हैरान
प्रबल - बलवान
पराक्रमी - शूरवीर
तुच्छ - महत्त्वहीन
बाटी - आग पर सेंकी हुई मोटी रोटी
हस्ताक्षर - दस्तख़त

मुहावरा :

पीठ ठोंकना - शाबाशी देना

अभ्यास

पाठ-ज्ञान

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–
   (क) अपने गुरु के प्रति शिवाजी के मन में कैसा भाव था?
   (ख) गुरु जी को क्या कष्ट था?
   (ग) स्वामी रामदास ने अपने दर्द के निवारण का क्या उपाय बताया?
   (घ) शिवाजी वन में किन परिस्थितियों में पहुँचे?
   (ङ) सिंहनी को देखकर शिवाजी ने क्या किया?
   (च) शिवाजी द्वारा गुरु को दिया गया कागज़ सामान्य कागज़ से भिन्न था, कैसे? बताइए।

2. रिक्त स्थान भरिए–
   (क) ..... शिवाजी के गुरु थे।
   (ख) गुरु जी ने शिवाजी की परीक्षा लेने के लिए ..... मँगवाया।
   (ग) शिवाजी ..... के राजा थे।
   (घ) गुरु रामदास जी के शिष्य शिवाजी ने भिक्षा में ..... दिया।
   (ङ) स्वामी रामदास अपने शिष्य से भिक्षा के रूप में ..... चाहते थे।

3. किसने, किससे और क्यों कहा? लिखिए–
   (क) "मेरे पेट में बड़े ज़ोरों की पीड़ा हो रही है।"
   (ख) 'यदि मुझे दूध न मिला, तो मैं लौटकर गुरु जी के पास न जाऊँगा।'
   (ग) "औषधि के लिए मुझे तुम्हारा थोड़ा-सा दूध चाहिए।"
   (घ) "मुझे तो केवल दो मुट्ठी आटा चाहिए।"